NEERAJ®

राजनीतिक सिद्धांत की समझ

(Understanding Political Theory)

B.P.S.C.-101

B.A. Pol. Science (Hons.) - 1st Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Payal Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

राजनीतिक सिद्धांत की समझ

(Understanding Political Theory)

Question Paper–June-2023 (Solved) 1-2

Question Paper–December-2022 (Solved) 1

Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1-3

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

राजनीतिक सिद्धांत का परिचय

(Introducing Political Theory)

1. राजनीतिक सिद्धांत क्या है? : दो दृष्टिकोण–मानक और अनुभवजन्य 1
   (What is Political Theory? : Two Approaches – Normative and Empirical)

2. राजनीति क्या है : राज्य और शक्ति का अध्ययन 8
   (What is Politics? : Study of State and Power)

राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोण

(Approaches to Political Theory)

3. उदारवादी 15
   (Liberal)

4. मार्क्सवादी 27
   (Marxist)

5. रूढ़िवादी 39
   (Conservative)

6. नारीवादी 49
(Feminist)

7. उत्तर-आधुनिकवाद 64
(Postmodern)

लोकतंत्र का व्याकरण
(The Idea of Democracy)

8. लोकतंत्र का व्याकरण 70
(The Idea of Democracy)

9. लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और उत्तरदायित्व 98
(Democracy, Representation and Accountability)

10. प्रतिनिधि लोकतंत्र और इसकी सीमाएं 118
(Representative Democracy and Its Limits)

11. भागीदारी और मतभेद 126
(Participation and Dissent)

12. लोकतंत्र और नागरिकता 133
(Democracy and Citizenship)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

राजनीतिक सिद्धान्त की समझ

B.P.S.C.-101

(Understanding Political Theory)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *इस प्रश्न-पत्र में दो अनुभाग हैं। कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक अनुभाग में से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

अनुभाग-I

प्रश्न 1. राजनीतिक सिद्धांत के अध्ययन के आदर्शात्मक और वस्तुपरक दृष्टिकोणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'मानक अथवा निर्देशात्मक दृष्टिकोण', 'अनुभवजन्य दृष्टिकोण', पृष्ठ-5, प्रश्न 4

प्रश्न 2. राजनीति से आप क्या समझते हैं? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-8, 'राजनीति एक व्यावहारिक गतिविधि के रूप में'

प्रश्न 3. उदारवाद और नव-उदारवाद के मध्य भेद की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-16, 'उदारवादी सिद्धांत के विभिन्न चरण', पृष्ठ-21, प्रश्न 2

प्रश्न 4. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के विषय में विस्तार से बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-30, प्रश्न 3

इसे भी देखें–द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स की शिक्षाओं से प्राप्त वास्तविकता के लिए एक दार्शनिक दृष्टिकोण है। मार्क्स और एंगेल्स के लिए भौतिकवाद का अर्थ था कि भौतिक दुनिया, इंद्रियों के लिए बोधगम्य, मन या आत्मा से स्वतंत्र वस्तुनिष्ठ वास्तविकता है। उन्होंने मानसिक या आध्यात्मिक प्रक्रियाओं की वास्तविकता से इनकार नहीं किया, लेकिन पुष्टि की कि विचार केवल भौतिक स्थितियों के उत्पाद और प्रतिबिंब के रूप में उत्पन्न हो सकते हैं। मार्क्स और एंगेल्स ने भौतिकवाद को आदर्शवाद के विपरीत समझा, जिसका अर्थ था कोई भी सिद्धांत जो पदार्थ को मन या आत्मा पर निर्भर मानता है, मन या आत्मा को पदार्थ से स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में रखने में सक्षम मानता है। उनके लिए दर्शन के ऐतिहासिक विकास के दौरान भौतिकवादी और आदर्शवादी विचारों का असंगत रूप से विरोध किया गया था। उन्होंने एक संपूर्ण भौतिकवादी दृष्टिकोण अपनाया, यह मानते हुए कि भौतिकवाद को आदर्शवाद के साथ जोड़ने या सामंजस्य स्थापित करने के किसी भी प्रयास के परिणामस्वरूप भ्रम और असंगतता पैदा होनी चाहिए।

मार्क्स और एंगेल्स की द्वंद्वात्मकता की अवधारणा काफी हद तक जी.डब्ल्यू.एफ. की देन है। हेगेल विचार के 'आध्यात्मिक' तरीके के विरोध में, जो चीजों को अमूर्तता में देखता था, प्रत्येक अपने आप में और जैसे कि निश्चित गुणों से संपन्न था, हेगेलियन द्वंद्वात्मकता चीजों को उनके आंदोलनों और परिवर्तनों, अंतर्संबंधों और अंत:क्रियाओं में मानती है। हर चीज बनने और खत्म होने की निरंतर प्रक्रिया में है, जिसमें कुछ भी स्थायी नहीं है लेकिन सब कुछ बदल जाता है और अंतत: खत्म हो जाता है। सभी चीजों में विरोधाभासी पक्ष या पहलू होते हैं, जिनमें तनाव या संघर्ष परिवर्तन की प्रेरक शक्ति है और अंतत: उन्हें बदल देता है या विघटित कर देता है। लेकिन जबकि हेगेल ने परिवर्तन और विकास को विश्व भावना या विचार की अभिव्यक्ति के रूप में देखा, जो स्वयं को प्रकृति और मानव समाज में साकार करता है, मार्क्स और एंगेल्स के लिए परिवर्तन भौतिक दुनिया की प्रकृति में अंतर्निहित था। इसलिए उनका मानना था कि कोई भी, जैसा कि हेगेल ने प्रयास किया था, किसी भी 'द्वंद्वात्मकता के सिद्धांतों' से घटनाओं के वास्तविक पाठ्यक्रम का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है; सिद्धांतों का अनुमान घटनाओं से लगाया जाना चाहिए।

मार्क्स और एंगेल्स का ज्ञान सिद्धांत इस भौतिकवादी आधार से शुरू हुआ कि सारा ज्ञान इंद्रियों से प्राप्त होता है। लेकिन यंत्रवादी दृष्टिकोण के विपरीत, जो विशेष रूप से दिए गए इंद्रिय छापों से ज्ञान प्राप्त करता है, उन्होंने व्यावहारिक गतिविधि के दौरान सामाजिक रूप से अर्जित मानव ज्ञान के द्वंद्वात्मक विकास पर जोर दिया। व्यक्ति चीजों का ज्ञान केवल उन चीजों के साथ अपनी व्यावहारिक बातचीत के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं, अपने विचारों को अपने अभ्यास के अनुरूप तैयार कर सकते हैं और केवल सामाजिक अभ्यास ही वास्तविकता के साथ विचार के पत्राचार का परीक्षण

www.neerajbooks.com

प्रदान करता है अर्थात सत्य का। ज्ञान का यह सिद्धांत समान रूप से व्यक्तिपरक आदर्शवाद का विरोध करता है, जिसके अनुसार व्यक्ति केवल समझदार दिखावे को जान सकते हैं, जबकि चीजें स्वयं मायावी हैं, और वस्तुनिष्ठ आदर्शवाद के अनुसार जिसके अनुसार व्यक्ति शुद्ध अंतर्ज्ञान या विचार से स्वतंत्र रूप से अतिसंवेदनशील वास्तविकता को जान सकते हैं।

अनुभाग-II

प्रश्न 5. निम्नलिखित में संक्षिप्त लेख लिखिए–

(क) रूढ़िवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-41, प्रश्न 1

(ख) नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की तीसरी लहर

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-53, प्रश्न 3

प्रश्न 6. निम्नलिखित पर संक्षिप्त लेख लिखिए–

(क) उत्तर-आधुनिकवाद पर मिशेल फूको के विचार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-65, 'मिशेल फूको',

(ख) प्रक्रियात्मक बनाम ठोस लोकतंत्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-73, प्रश्न 2

प्रश्न 7. एक लोकतंत्र में प्रतिनिधित्व के सिद्धांतों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-99, 'प्रतिनिधित्व के सिद्धांत रूढ़िवादी सिद्धांत', पृष्ठ-100, 'उदारवादी सिद्धांत', 'अतिवादी सिद्धांत', पृष्ठ-106, प्रश्न 2

प्रश्न 8. लोकतंत्र और लोकमत के अंत:संबंध का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-121, 'लोकतंत्र और जनमत', पृष्ठ-123, प्रश्न 8

इसे भी देखें–लोकतंत्र काफी हद तक जनता की राय पर निर्भर है। प्रतिनिधि लोकतंत्र में सरकार को अपनी नीतियों के बारे में जनता की प्रतिक्रिया पर विचार करना होता है। पार्टियां सत्ता पर कब्जा करना और उसे बरकरार रखना चाहती हैं और इसमें उनके काम और लोगों की राय अहम भूमिका निभाती है। जब जनता की राय मजबूत होती है, तो वह सत्ता पर कब्जा करने और किसी एक पार्टी या पार्टियों के संयोजन, जिसे गठबंधन कहा जाता है, की सरकार बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक सतर्क और बुद्धिमान जनता खुद को सूचित रखती है और सरकार लोगों की आकांक्षाओं की उपेक्षा करने का जोखिम नहीं उठा सकती। यदि पार्टी उनकी आकांक्षाओं की उपेक्षा करती है, तो वह अलोकप्रिय हो जाती है और यदि जनता सतर्वा और बुद्धिमान नहीं है, तो सरकार गैर-जिम्मेदार हो सकती है। इससे लोकतंत्र की नींव को खतरा हो सकता है। ऐसी कई एजेंसियाँ हैं, जो जनमत तैयार करने में मदद करती हैं। नागरिकों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि उनके आसपास, उनके देश और दुनिया भर में क्या हो रहा है। किसी देश की सरकार आंतरिक के साथ-साथ विदेशी नीतियां भी बनाती है।

लोकतंत्र के अच्छे से काम करने के लिए नागरिकों का खुद को अपडेट रखना जरूरी है। जो एजेंसियाँ ठोस जनमत तैयार करने में मदद करती हैं, वे हैं–प्रेस, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सिनेमा। डिजिटल युग, इंटरनेट, सोशल नेटवर्विंग साइट्स और टीवी भी धारणाओं और राय को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। फेसबुक और व्हाट्सएप जैसे कई नए माध्यम हैं, जिनका इस्तेमाल मतदाताओं से सीधा जुड़ाव बनाने के लिए किया जा रहा है। लोकतंत्र किसी व्यक्ति को निर्णय लेने में अपनी राय का योगदान देने की भी अनुमति देता है। इसे हासिल करने के लिए स्वतंत्र चर्चा और तर्क बहुत महत्वपूर्ण है। लोकतांत्रिक सरकार आम नागरिक को बहुत आजादी देती है। नागरिक इस स्वतंत्रता का उपयोग जिम्मेदारी, संयम और अनुशासन के साथ करें। यदि लोगों को कुछ शिकायतें हैं, तो उन्हें उन्हें लोकतांत्रिक प्रणाली द्वारा प्रदान किए गए चौनलों के माध्यम से दिखाना चाहिए। नागरिकों की ओर से अनुशासनहीनता के कृत्य लोकतांत्रिक व्यवस्था को नष्ट कर सकते हैं।

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

राजनीतिक सिद्धांत की समझ
(Understanding Political Theory)

राजनीतिक सिद्धांत का परिचय
(Introducing Political Theory)

राजनीतिक सिद्धांत क्या है? : दो दृष्टिकोण– मानक और अनुभवजन्य
(What is Political Theory? : Two Approaches – Normative and Empirical)

1

परिचय

राजनीतिक सिद्धांत को राजनीतिक विज्ञान का ही एक महत्त्वपूर्ण भाग माना जाता है। राजनीतिक सिद्धांत का उदय शैक्षणिक अनुशासन के रूप में हुआ है। इस अनुशासन के अन्तर्गत उन व्यक्तियों को शामिल किया जाता था, जो कि स्वयं को दार्शनिक तथा वैज्ञानिकों की श्रेणी में मानते थे। राजनीतिक सिद्धांत पूर्णतः राजनीतिक विज्ञान हैं तथा यह सिद्धांतों पर आधारित हैं, क्योंकि सिद्धांतों के बिना विज्ञान का कोई अस्तित्व नहीं माना जाता है। अतः राजनीतिक सिद्धांत का प्रयोग राजनीतिक विज्ञान के पर्यायवाची के रूप में किया जाता है। अतः इस इकाई के माध्यम से हम राजनीतिक सिद्धांत के विषय में अध्ययन करेंगे।

अध्याय का विहंगावलोकन

राजनीतिक सिद्धांत और अन्य पारस्परिक सम्बन्ध

राजनीतिक सिद्धांत तथा उनके समानार्थी शब्दों के अन्तर्गत अनेक अंतर पाये जाते हैं। यह शब्द मुख्यतः राजनीतिक विज्ञान, राजनीतिक दर्शन तथा राजनीतिक विचारधारा हैं। राजनीतिक विज्ञान के अन्तर्गत राजनीति तथा राजनीतिक व्यवहार के विषय में व्यवहारिक सामान्यीकरण तथा कानून प्रदान करने की कोशिश की जाती है। राजनीतिक सिद्धांत मुख्यतः राजनीतिक व्यवहार पर दार्शनिक तथा नैतिक मानदंडों को दर्शाता है।

राजनीतिक सिद्धांत का राजनीतिक दर्शन के साथ ही घनिष्ठ संबंध है, क्योंकि राजनीतिक दर्शन न्याय की अवधारणा, राजनीति के विभिन्न मुद्दों तथा राजनीति से संबंधित अन्य जटिल गतिविधियों के विषय में चर्चा करता है। साथ ही राजनीतिक सिद्धांत तथा राजनीतिक दर्शन दोनों ही सिद्धांतवादी अवधारणा के आधार पर चलते हैं। राजनीतिक दर्शन एक जटिल गतिविधि है। अनेक विशेषज्ञ भी विभिन्न विश्लेषणों हेतु इस प्रक्रिया का अभ्यास करते हैं।

राजनीतिक सिद्धांत व राजनीतिक विचारधारा के मध्य संबंध भी हैं तथा यह एक-दूसरे से भिन्न भी हैं। जिस प्रकार राजनीतिक सिद्धांतों में पूरे समुदाय के विषय में विचार किया जाता है उसी प्रकार राजनीतिक विचार में भी पूरे समुदाय के विषय में चर्चा की जाती है। परन्तु यहां भिन्नता तब देखी जाती है, जबकि राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक विचारों के विपरीत एक व्यक्ति को अटकलों द्वारा संदर्भित करता है। राजनीतिक विचारधारा को आधुनिक विचारधाराओं के जनक के रूप में जाना जाता है। सभी राजनीतिक विचारधाराओं को राजनीतिक दर्शन के रूप में जाना जाता है। बीसवीं शताब्दी में भी नारीवाद, साम्यवाद तथा उदारवाद जैसी अनेक विचारधाराओं को देखा गया था। राजनीतिक विचारधारा में एक ऐसा विशेष गुण होता है, जोकि राजनीतिक दर्शन के विपरीत आदर्श समाज के महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन को रोककर हतोत्साहित करता है।

गेमिने व सेबाइन ने राजनीतिक विचारधारा को राजनीतिक सिद्धांतों की अस्वीकृति के रूप में माना है। इनके अनुसार विचारधारा हाल की ही उत्पत्ति है, जबकि सिद्धांत एक पूर्वानुमानित वरीयता है। इन्होंने विचारधारा को सकारात्मकता के प्रभाव के

www.neerajbooks.com

अन्तर्गत लेते हुए इसे व्यक्तिपरक तथा अविश्वसनीय मूल्य वरीयताओं पर आधारित माना है।

विभिन्न विद्वानों जैसे–गेमिने, जर्मिनो व प्लेटो आदि ने भी राजनीतिक सिद्धांत को राजनीतिक विचारधारा से भिन्न माना है। राजनीतिक सिद्धांतकार की भूमिका को एक दोहरी भूमिका के रूप में माना जाता है। इसमें एक वैज्ञानिक तथा दार्शनिक के द्वारा जिस तरह से अपनी भूमिकाओं को विभाजित किया जाता है, वह उसके स्वभाव तथा हित पर निर्भर करता है। इसमें दो भूमिकाओं का योग करके ज्ञान को सार्थक तरीकों से प्रस्तुत किया जा सकता है।

सिद्धांतवादियों के द्वारा किसी भी देश अथवा वर्ग की पार्टी की व्यवस्था में किसी भी प्रकार की विशेष रुचि नहीं ली जाती वरन् रुचि से रहित वास्तविकता की छवि को प्रभावित न कर उनके सिद्धांत को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। विचारधारा का मुख्य लक्ष्य समाज में न्यायसंगत विशेष प्रणाली का आयोजन करना होता है। इस प्रकार विचारधारा एक ऐसा स्वैच्छिक मामला है, जिसमें नई सत्ता के बंटवारे की एक उम्मीद हमारे समक्ष आती है, चूंकि यह आलोचना का कारण भी होता है, क्योंकि हमें सुरुचिपूर्ण कार्यों के बजाय तर्कसंगतता से ज्यादा प्यार होता है। निष्पक्ष रूप से व्यवहार के बजाय, हमारे समक्ष यहां एक विकृत तस्वीर होगी।

राजनीतिक सिद्धांत का विकास

समाज में जो परिवर्तन होते रहते हैं वही राजनीतिक सिद्धांत के विकास के रूप में उभरकर सामने आते हैं। राजनीतिक सिद्धांत प्राय: विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का विभिन्न रूप ही होते हैं। इस विषय पर हेगेल का मंथन ''मिनर्वा का उल्लू तब उड़ान भर लेता है जब अंधेरे की परछाई बढ़ जाती है'' सत्य है।

राजनीतिक सिद्धांत की उत्पत्ति राजनीतिक चिन्तन के द्वारा मानी जाती है। इसमें सिद्धांतकारी जब अपने रुझानों व कल्पनाओं की पूर्ति करना चाहते हैं तो वह उन आदर्शों की खोज करते हैं, जो उनके जीवन को ज्यादा बेहतर बना सके। इस कारण सिद्धांतवादी ठोस राजनीतिक स्थिति से प्रेरित रहते हैं।

राजनीतिक सिद्धांत का इतिहास देखें तो यह पता चलता है कि समाज को प्रभावित करने वाली बीमारियों तथा रोगों ने सिद्धांत की जड़ों को कमजोर किया है, जिससे भविष्य हेतु उचित खाका तैयार नहीं हो पाया।

परन्तु एक सत्य यह भी है कि सिद्धांत हेतु उचित प्रोत्साहन सदैव ही किसी प्रकार की विफलता से ही प्राप्त होता है। साथ ही एक दृढ़ विश्वास से यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि चीजों को बेहतर रूप से समझकर किस प्रकार से उनका हल निकाला जा सकता है। अत: इसमें समस्या की जड़ तक पहुंच कर उनका हल निकालने के प्रयत्नों पर बल दिया जाता है।

राजनीतिक सिद्धांत को काव्य व कला से भी अलग किया जाता है। काव्य को सिद्धांत की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता है। अत: सिद्धांत व काव्य के मध्य ज्यादा संबंध नहीं देखा जाता है।

राजनीतिक सिद्धांत की परिभाषा की दिशा में

राजनीतिक सिद्धांत को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। सेबाइन ने यहां राजनीतिक सिद्धांत को परिभाषित करते हुए कहा कि ''राजनीतिक सिद्धांत में तथ्यात्मक, कारण तथा मूल्यवान कारक सम्मिलित हैं।'' हेकर के अनुसार ''राजनीतिक सिद्धांत निराशाजनक व अनिच्छुक गतिविधि है''। इस तरह राजनीतिक सिद्धांत को राजनीतिक घटनाओं के वर्ग के कुछ स्पष्टीकृत सिद्धांत के प्रस्तावों के साथ जोड़ा जाता है। अत: सिद्धांत विचारों के विपरीत की घटनाओं पर विचार नहीं करता वरन् श्रेणी व मुद्दों से संबंधित होता है।

मुख्य सैद्धांतिक अवधारणाओं के महत्त्व

राजनीतिक सिद्धांत को जानने के लिये मुख्य सैद्धांतिक अवधारणाओं के महत्त्व को जानना अति आवश्यक होता है। साथ ही समाज के चरित्र तथा प्रकृति को समझने के लिये भी इन अमूर्त अवधारणाओं को जानना अति आवश्यक होता है। यह अवधारणाएं हमें विचारों व वास्तविकताओं के विषय में बताती हैं।

क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत हो चुका है?

बीसवीं शताब्दी के मध्य में यह माना जाने लगा कि राजनीतिक सिद्धांत मृत हो चुका है। कुछ विद्वानों ने इसके गिरने व कुछ ने इसके मृत होने की बात की। 1930 के दशक में मानक सिद्धांतों की आलोचना तार्किक सकारात्मकवादियों के द्वारा की गई। साथ ही इसकी आलोचना व्यवहारवादियों ने भी की। ईस्टन ने इस विषय में कहा कि राजनीतिक सिद्धांत अपनी रचनात्मक भूमिका को खो चुका है। ईस्टन ने विलियम डनिंग, चार्ल्स एच. मक्लेवेन तथा जार्ज एम. सेबाइन को राजनीतिक सिद्धांत में इतिहासवाद लाने का दोषी ठहराया।

ईस्टन के अनुसार राजनीतिक सिद्धांत की गिरावट के कई कारण थे। इसमें राजनीतिक वैज्ञानिकों के मध्य की प्रवृत्ति उनके नैतिक प्रस्तावों के अनुरूप है जो रचनात्मक दृष्टिकोण के नुकसान को बताती है। इन्होंने कहा कि किसी के गुणों को उजागर व प्रकट करना बताता है कि योग्यता की जांच की आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु यह मूल, विकास तथा सामाजिक प्रभाव को समझता है। राजनीतिक सिद्धांत में गिरावट के मुख्यत: चार कारण होते हैं–ऐतिहासिकतावाद, नैतिक सापेक्षतावाद, अति तथ्यात्मकतावाद तथा सकारात्मकतावाद आदि।

राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान

1930 के दशक के अन्तर्गत राजनीतिक सिद्धांत ने साम्यवाद, फासीवाद तथा नाजीवाद के साम्राज्यवादी सिद्धांतों के विरोध में लोकतांत्रिक सिद्धांत की रक्षा के उद्देश्यों से विचारों के इतिहास का अध्ययन करना शुरू किया। विभिन्न राजनीतिज्ञों ने जैसे–आरेण्ड्ट, थिओडोर तथा मार्क्यूस आदि ने इस विषय पर चर्चा की। लियो स्ट्रॉस ने आधुनिक समय के संकट का समाधान करने हेतु शास्त्रीय

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

राजनीतिक सिद्धांतों के महत्त्व की पुष्टि की। इन्होंने नये राजनीतिक विज्ञान के तरीकों तथा उद्देश्यों की जांच करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धांत की तुलना में यह दोषपूर्ण था, विशेषत: अरस्तु की तुलना में।

ऐसा माना जाता था कि राजनीतिक विज्ञान, राजनीतिक वस्तुओं का मूल्यांकन करता है तथा यह राजनीतिक कार्यवाही को अनिवार्यत: नैतिक रूप से देखता है। ऐसी मान्यता है कि व्यावहारिक विज्ञान सैद्धांतिक विज्ञानों से प्राप्त हुए हैं। परन्तु उस तरह से नहीं जिस तरह से शास्त्रीय परंपरा को दर्शाया जाता है। वोगेलिन राजनीतिक विज्ञान तथा राजनीतिक सिद्धांत को अविभाज्य मानते हैं तथा यह एक-दूसरे के बिना संभव नहीं है। सिद्धांत समाज में सिर्फ मानव अस्तित्व के विषय में मात्र विचार नहीं करते वरन् यह अनुभवों के निश्चित वर्ग की व्याख्या कर अस्तित्व के अर्थ को तैयार करते हैं। इसका तर्क मनमाना नहीं होता, वरन् एकत्रित अनुभवों द्वारा इसकी वैधता प्राप्त करता है, अत: इसे स्थायी रूप से अनुभवजन्य नियंत्रण हेतु संदर्भित होना चाहिये।

राजनीतिक सिद्धांत में दृष्टिकोण

राजनीतिक सिद्धांत की अलग-अलग धारणा को पहचानना व वर्गीकृत करना बहुत ही मुश्किल होता है। अत: इसके विभिन्न सिद्धांतों के अलग-अलग दृष्टिकोण को देखा जाता है। इसमें मुख्यत: तीन धारणाओं को देखा जाता है–ऐतिहासिक, सामान्य तथा अनुभवजन्य इन तीनों धारणाओं का अलग-अलग आधार, अतीत व वर्तमान के आधार पर जांच तथा मूल्यांकन किया जाता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण

अनेक सिद्धांतकारों ने इतिहास को आधार मानते हुए सिद्धांत निर्माण का प्रयास किया। इसमें सेबाइन का नाम मुख्य है। इन्होंने कहा कि राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति का वर्णन वर्णनात्मक रूप से उचित प्रकार से किया जाता है। इस तरह के सिद्धांत में ऐतिहासिक घटनाओं व विशेष परिस्थितियों को भी देखा जाता है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जाता है कि राजनीतिक सिद्धांत सदैव स्थितियों पर निर्भर करते हैं। इसमें ऐतिहासिक समस्या के आधार पर ही समस्या निर्धारित हो जाती है तथा सिद्धांत के आधार पर उसका समाधान निकाला जाता है। इस विषय में कोबबान ने माना कि परंपरागत विधि, जिसमें इतिहास को पूर्णत: महत्त्व दिया जाता है वह राजनीतिक सिद्धांत की समस्याओं पर विचार का उचित तरीका होता है। अतीत के द्वारा सिद्धांत निर्माण का प्रयास उचित रूप में किया जाता है। ऐतिहासिक ज्ञान से हमें पीढ़ियों की असफलताओं के विषय में पता चलता है। साथ ही यह वर्तमान के सामूहिक ज्ञान के विषय में भी बताता है तथा हमारे अन्दर की कल्पनाशीलता के विषय में ज्ञान देता है।

ऐतिहासिक अवधारणा भी हमारे मानक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है, क्योंकि माना जाता है कि हमारा सामाजिक व राजनीतिक ब्रह्मांड उन्हीं चीजों का उत्पाद है जिसकी जड़ उसके अतीत में होती है। अतीत का मूल्य कभी भी खत्म नहीं किया जा सकता है। यदि कोई इसके पहलू से अंजान भी होगा तो भी यह एक निश्चित स्तर से परे राजनीतिक सिद्धांत में इस दृष्टिकोण की उपयोगिता को देखा जाता है। राजनीतिक सिद्धांत के इस दृष्टिकोण की उपयोगिता को एक निश्चित स्तर से अलग रखा जाता है, लेकिन यह संदिग्ध है, क्योंकि यह सदैव पुराने समय में पुराने विचारों से बंधा रहता है।

मानक अथवा निर्देशात्मक दृष्टिकोण

राजनीतिक सिद्धांत को मुख्यत: दार्शनिक सिद्धांत के नाम से जाना जाता है, कुछ इसे नैतिक सिद्धांत के रूप में जानते हैं। मानक अवधारणा मुख्यत: सिद्धांत व उद्देश्य, तर्क, अन्तर्दृष्टि तथा अनुभवों की सहायता से तर्क तथा उद्देश्यों पर आधारित होती है।

मानकवाद के अन्तर्गत अनेक आलोचनाओं को देखा जाता है जो कि निम्नलिखित हैं–

1. मूल्यों की सापेक्षता।
2. नैतिकता व मानदंडों का सांस्कृतिक आधार।
3. प्रतिष्ठानों में वैचारिक विषय सूची तथा
4. परियोजना का सार तथा यूरोपियन प्रकृति।

जॉन रॉल्स की पुस्तक 'ए थ्योरी ऑफ जस्टिस' एक ऐसा मामला है जो कि अनुभवजन्य निष्कर्षों में तर्क तथा नैतिकता संबंधी राजनीतिक सिद्धांत को सहारा देता है। रॉल्स अपनी कल्पना के साथ, वितरण, न्याय आदि हेतु मानक दार्शनिक तर्कों को जोड़ने हेतु 'मूल स्थिति' बनाते हैं।

अनुभवजन्य दृष्टिकोण

राजनीतिक सिद्धांत में अनुभवजन्य परियोजना दृष्टिकोण को महत्त्व दिया गया। मानक राजनीतिक सिद्धांत को सिर्फ उसकी वरीयताओं तथा मन की अभिव्यक्ति के बयान के रूप में उजागर किया जाता है। राजनीतिक सिद्धांत के अन्तर्गत यह दावा किया जाता है कि यह अनुभवजन्य परियोजना के अनुभववादी सिद्धांत पर आधारित है। इस मानदंड में सत्य तथा झूठ का गठन किया जाता है। इस मानदंड का सार प्राय: प्रयोग व सत्यापन सिद्धांत में दर्ज किया जाता है।

राजनीतिक सिद्धांत में क्रांति का मोड़ तब आया जबकि यह व्यवहारिकतापूर्ण हो गई। इस दिशा में क्रांति 1950 के दशक में राजनीतिक सिद्धांत के भीतर एक प्रभावशाली दिशा में प्रवेश कर गई। इसमें मुख्यत: कुछ क्षेत्रों को लिया गया जो कि निम्नलिखित थे–

1. विश्लेषण में मात्रात्मक तकनीकी व प्रोत्साहन।
2. मानक ढांचों के अनुभवजन्य अनुसंधानों के प्रचार हेतु अति संवेदनशीलता होना।
3. विचारों के इतिहास की स्वीकृति व अस्वीकृति।
4. सूक्ष्म अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करना। इसका प्रभाव अनुभवजन्य उपचार पर पड़ता है।
5. विशेषज्ञता का गौरव ज्ञान करना।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

6. व्यक्ति के व्यवहार से डाटा प्राप्त करना।
7. मूल्य मुक्त शोध हेतु आग्रह करना।

इस दृष्टिकोण का अनेक विद्वानों के द्वारा विरोध भी किया गया तथा तर्कसंगत व्याख्यान भी बताया गया।

समकालीन दृष्टिकोण

समकालीन दृष्टिकोण में राजनीतिक सिद्धांत ने 1980 तथा 90 के दशक में अपनी उपस्थिति बनाई तथा ज्ञान व विश्वास से संबंधित श्रेणियों को इसमें शामिल किया। राजनीतिक सिद्धांत से संबंधित अनेक पहलुओं को तथा सिद्धांतों को भी इसमें शामिल किया गया। इसमें ''उत्तर आधुनिक स्थिति'' को बनाये रखने के लिये सिद्धांतों को शामिल किया गया। जब भी किसी सैद्धान्तिक क्षेत्र की योजना बनाई जाती है, तो इसे राजनीतिक सिद्धांत का भागीदार बनाया जाता है। इसमें निम्नलिखित बातों को महत्त्व प्रदान किया जाता है–

(क) सार्वभौमिकता के लिये विपक्ष के दावों को सार्वभौमिक मूल्यों तथा मानदण्डों के अनुरूप तैयार किया जाता है। साम्प्रदायिक सिद्धांत व बहुल-संस्कृतिवाद सिद्धांतों ने भी इस पर बल दिया है व इसे सार्वभौमिक सिद्धांतों ने विशिष्टतावादी का केन्द्र कहा है।

(ख) उदारवादी व मार्क्सवादी दोनों ही विवरणों द्वारा उदारवाद व मार्क्सवाद की वास्तविकता व सत्य की नींव को नहीं माना गया। इसमें बड़े विवरणों की आलोचना को देखा गया है।

(ग) उत्तर सकारात्मकवाद सिद्धांत के अन्तर्गत व्यवहारवादियों के द्वारा समर्थित सामाजिक मूल्य तटस्थता के समय प्रतिबद्धता का सबूत है। राजनीतिक सिद्धांत को प्रामाणिक व राजनीतिक रूप से लगी परियोजनाएं कहा जाता है। अत: इसे ही उत्तर सकारात्मकवाद कहा जाता है।

(घ) अनुभवजन्य तथा तुलनात्मक समसामयिक सिद्धांत के मध्य उत्तर सकारात्मक जोर के प्रयासों से पूर्व अनुभवजन्य तथा तुलनात्मक दृष्टिकोण की जरूरतों को देखा जाता है। इसमें बहुल-संस्कृतिवाद को मुख्य उदाहरण माना जाता है, जो कि विषयवस्तु के प्रति संवेदनशीलता को देखता है। समाज तथा राजनीति की वास्तविक चुनौती को अनुभवजन्य वास्तविकता के आधार पर चिह्नित किया जाता है। अत: इससे एक वैध राजनीतिक सिद्धांत उभरता है, जो आधुनिकतावादी दृष्टिकोण की कमजोरियों को दूर करता है। शेल्डन वोलिन ने इसे महाकाव्य सिद्धांत के नाम से जाना है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. राजनीतिक सिद्धांत से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–मुख्य रूप से राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक घटनाओं व संस्थानों के दार्शनिक अथवा नैतिक मानदण्डों को दर्शाता है। परन्तु व्यापक रूप में देखा जाये तो राजनीतिक सिद्धांत का संबंध मुख्यत: राजनीति में मानवीय हस्तक्षेप को सुविधाजनक बनाकर इतिहास को आकार देने से लगाया जाता है। इसके अंतर्गत सिद्धांतकारों द्वारा आयोजित की जाने वाली अवधारणाओं के विषय में भी विचार-विमर्श किये जाते हैं। राजनीतिक सिद्धांत के अन्तर्गत कोई भी परियोजना जो कठोर आलोचना के अधीन होकर प्रामाणिक सोच के साथ अनुभवजन्य निष्कर्षों को एकीकृत करती है उसे सम्मिलित किया जाता है। यह रचनात्मकता के द्वारों को खोलकर भविष्य हेतु मार्गदर्शन करता है। इस प्रकार राजनीतिक सिद्धांत का सम्बन्ध एक ओर राजनीतिक दर्शन से होता है व दूसरी ओर राजनीतिक विचारों से होता है। राजनीतिक सिद्धांत का एक मुख्य पहलू यह भी होता है कि यह सदैव उन विशिष्ट स्थितियों व समस्याओं से परिभाषित होता है, जिन्हें राजनीतिक विचारकों ने देखा हो। अत: राजनीतिक सिद्धांत को समझने हेतु हमें विचारों के इतिहास को समझने की आवश्यकता होती है। राजनीतिक सिद्धांत सामान्य राजनीतिक जीवन से उत्पन्न दृष्टिकोण तथा कार्यों को समझाने व किसी विशेष संदर्भ में उनके बारे में सामान्यीकृत करने का प्रयास करता है। यह राजनीतिक सिद्धांत अवधारणाओं व परिस्थितियों के मध्य के संबंधों को दर्शाता है। अत: कहा जा सकता है कि राजनीतिक घटनाओं व व्यवहार का नैतिक मानदण्ड ही राजनीतिक सिद्धांत कहलाता है।

प्रश्न 2. राजनीतिक सिद्धांत की दूसरे अन्तर-संबंधित शब्दों से अन्तर करें।

उत्तर–राजनीतिक सिद्धांत के अनेक समानार्थी शब्द हैं। इनके मध्य अन्तर निम्नलिखित प्रकार से बताया जा सकता है–

राजनीतिक सिद्धांत–सर्वप्रथम यह देखेंगे कि राजनीतिक सिद्धांत क्या है। राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक घटनाओं तथा संस्थानों व वास्तविक राजनीतिक व्यवहार पर दार्शनिक या नैतिक मानदंडों को दर्शाता है। इसके अन्तर्गत यदि हम महान ग्रन्थों के अध्ययन अभ्यास पर विचार करेंगे तो महान साहित्यिक कार्यों की भी प्राप्ति होती है जो कि स्थानीय मानकों के बावजूद जीवन की समस्याओं तथा अन्य बातों से सम्बन्धित होते हैं। इसके अन्तर्गत शाश्वत् ज्ञान की उत्कृष्टता को भी शामिल किया जाता है। यह उत्कृष्टता मुख्यत: संस्कृति, स्थान व काल की विरासत न होकर समस्त मानव जाति से संबंधित होता है।

राजनीतिक विज्ञान–राजनीतिक विज्ञान के अन्तर्गत राजनीति तथा राजनीतिक व्यवहार के विषय में व्यवहारिक सामान्यीकरण तथा कानून प्रदान करने की कोशिश की जाती है। अत: यह सिद्धांतों से संबंधित नहीं हैं।

राजनीतिक दर्शन–राजनीतिक दर्शन एक जटिल गतिविधि है जो कि बिल्कुल सही तरह से इस प्रकार से समझी जा सकती है कि अनेक बड़े-बड़े विशेषज्ञ विभिन्न विश्लेषण के लिये इसका अभ्यास करते हैं। यह कहना सही है कि राजनीतिक दर्शन सिद्धांतवादी है, परन्तु हर राजनीतिक सिद्धांतवादी राजनीतिक दार्शनिक नहीं है। अत: राजनीतिक दर्शन आदर्श राजनीतिक सिद्धांत का ही हिस्सा है। अत: यह अवधारणाओं के बीच अन्तर संबंध स्थापित करता है।

www.neerajbooks.com